सेंट एंड्रयूज स्कॉट्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल

९वीं एवेन्यू, आई.पी.एक्सटेंशन, पटपडगंज,दिल्ली – ११००९२

सत्र: 2026-27

कक्षा:-6	विषय:हिन्दी	पाठ:10

बोलकर

(क) लड़के ने नाव पेड़ का तना काटकर बनाई। उसने नाव इसलिए बनाई क्योंकि वह सात समुद्र पार जाना चाहता था।

(ख) लड़के को देखकर पेड़ खुश होकर कहता था कि बेटा आओ, मेरे तने पर चढ़ो और मेरी डालों से झूलो। मेरे फल खाओ और मेरी छाँव में खेलो और खुश रहो।

(ग) लड़का पेड़ को देखकर प्रसन्न होता था तथा वह उसकी हर इच्छा पूरी करके भी बहुत खुश होता था।

(घ) लड़के ने फल न चबा पाने का कारण यह बताया कि मेरे दाँत बहुत कमजोर हो गए हैं। अब मैं उनसे फल चबा ही नहीं सकता।

लिखकर

लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) छोटा लड़का प्रतिदिन पेड़ के पास आकर के उसके फूल और पत्ते इकट्ठे करता था। उससे वह उनकी माला बनाता था।

(ख) लड़के ने धन की इच्छा इसलिए प्रकट की क्योंकि वह धन से कुछ चीजें खरीद कर मज़ा करना चाहता था। पेड़ ने उसकी इच्छा पूरी करने के लिए यह सुझाव दिया कि मेरे पास पैसे नहीं हैं, तुम मेरे फल तोड़ लो और इन्हें शहर में बेच देना।

(ग) लड़का घर इसलिए बनाना चाहता था जिसमें वह सुरक्षित रह सके। अब उसे पत्नी और बच्चे चाहिए थे। अतः उनके लिए भी उसे घर की आवश्यकता थी।

(घ) पेड़ ने लड़के से कहा कि तुम मेरी शाखाएँ काटकर उनसे घर बना लो। लड़के ने पेड़ की शाखाएँ काटीं और उन्हें अपना घर बनाने के लिए ले गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर-

(क) हमारी दुष्टि में लड़के ने पेड़ का तना काटा और उसकी नाव बनाकर समुद्र पार चला गया। पर पेड़ उसकी इस हरकत से खुश इसलिए नहीं था

क्योंकि पेड़ को उस लड़के का साथ चाहिए था, लेकिन चह लड़का उससे लाभ तो उठा रहा था पर अब उस पेड़ के साथ अपना समय नहीं बिता रहा था।

(ख) लड़के ने पेड़ के पास आकर सुस्ताने के लिए जगह माँगी और बताया कि मैं चहुत थका हुआ हूँ। हमारे विचार से लड़के ने ऐसा इसलिए कहा होगा क्योंकि अब वह बूढ़ा हो चुका था काम करने लायक नहीं रह गया था, इसलिए जीवन के इस मोड़ पर पहुँचकर उसे समझ आ गया था कि उसने जिस खुशी के लिए इतना समय बर्बाद किया, उस खुशी को वह पूरे जीवन नहीं पा सका। अतः अब वह शांत रहकर सुस्ताना चाहता था।

(ग) पाठ के अंत में लड़के ने यह इच्छा प्रकट की कि अब मुझे ज्यादा कुछ चाहिए नहीं, सिर्फ एक शांत जगह चाहिए- बैठने और सुस्ताने के लिए। क्योंकि मैं बहुत थका हुआ हूँ। पेड़ ने उसकी इच्छा को पूरी करने के लिए अपने आप को सीधा किया और कहा कि मेरे ठूँठ पर बैठ जाओ और आराम करो।

(घ) 'दानी पेड़' के माध्यम से प्रकृति की यह विशेषता प्रकट होती है कि प्रकृति हर हाल में सिर्फ़ देना जानती है, लेना नहीं। यह सिर्फ परोपकार करना जानती है। लोगों को खुश करना जानती है।

पठित गद्यांश

(क) पाठ- दानी पेड़

लेखक - अरविंद गुप्ता।

(ख) एक दिन जब लड़का पेड़ के पास आया तो पेड़ ने कहा, बेटा आओ। मेरे तने पर चढ़ो और डालों से झूलो। मेरे फल खाओ, मेरी छाँव में खेलो व खुश रहो।

(ग) लड़के ने पेड़ पर चढ़ने में यह मजबूरी दिखाई कि अब मैं बड़ा हो गया हूँ। अब मेरी उम्र पेड़ पर चढ़ने और खेलने की नहीं रह गई है।

(घ) लड़के ने यह इच्छा प्रकट की कि मुझे कुछ पैसे चाहिए। मैं अब चीजें खरीदकर मजा करना चाहता हूँ। क्या तुम मुझे कुछ पैसे दे सकते हो?

(ङ) अर्थ- दिवस- हमें दिन भर नहीं खेलना चाहिए, समय का सदुपयोग करना चाहिए ।

अर्थ-छाया- पेड़ हमे शीतल छाँव देकर धूप से बचाते है।